सिविल इंजीनियरिंग या आर्किटेक्चर

क्या बेहतर है आपके लिए?

यदि आप आर्किटेक्चर और सिविल इंजीनियरिंग के बीच चुनाव को लेकर बहुत दुविधा में हैं तो हम आपकी मदद कर सकते हैं। इन दोनों कोर्स के बीच के अंतर और दोनों की विशेषताओं को जाने बिना यह निर्णय लेना आसान नहीं है कि आपको दोनों में क्या चुनना चाहिए?

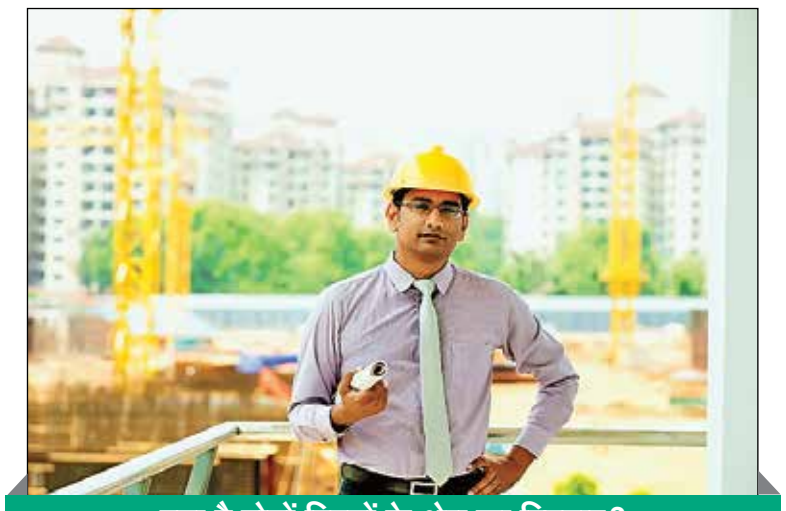

रियल एस्टेट सेक्टर, खास तौर पर कंस्ट्रक्शन इंडस्ट्री इन दोनों प्रोफेशन पर पूरी तरह से आश्रित रहती है: एक आर्किटेक्ट्स और दूसरे सिविल इंजीनियर्स। कंसट्रक्शन बिजनेस का जहां तक संबंध है, आर्किटेक्ट्स और सिविल इंजीनियर्स इनके अभिन्न हिस्से हैं। क्योंकि ये दोनों ही खूबसूरत और सुविधाजनक निर्माण कार्य करने में मदद कर सकते हैं।

प्रकृति में एक ही जैसे इन दोनों प्रोफेशंस के लिए इसी इंडस्ट्री में काम के अवसर हैं। और शायद इसीलिए विद्यार्थी दोनों में से क्या चुनें इसे लेकर पसोपेश में पड़ जाते हैं। एक बात और भी है कि दोनों के बीच बहुत सारी समानताएं भी हैं। लेकिन इसके साथ ही दोनों के बीच बहुत सूक्ष्म लेकिन बहुत महत्वपूर्ण अंतर भी है। इन्हीं समानताओं और असमानताओं के प्रकाश में दोनों में से किसका चयन किया जाना चाहिए और क्यों इसका जवाब हम ढूंढने की कोशिश कर रहे हैं।

स्टूडेंट्स की मदद करने के लिए और उनकी रुचि के अनुसार निर्णय करने के लिए हमने विषय का क्षेत्र, परिभाषा, काम करने की प्रकृति, संभावित आय, अच्छे कॉलेज और कुछ दूसरी चीजों की सूचनाएं हमने जमा की हैं।

विषय की परिभाषा

एक तरफ सिविल इंजीनियरिंग और आर्किटेक्चर दोनों ही अपने कोर्स और कंटेट में एक जैसी ही लगते हैं, तब बात इनकी परिभाषाओं की होती है। दोनों के बीच बहुत सारे फर्क हैं।

आर्किटेक्चर: आर्किटेक्चर शब्द की उत्पत्ति 'आर्किटेक्टोन' से हुई है। जिसका मतलब है 'चीफ-बिल्डर' या 'मुख्य भवन निर्माता'। जब इस शब्द की उत्पत्ति हुई होगी तब हो सकता है कि आर्किटेक्ट्स ही बिल्डर हुआ करते होंगे। लेकिन जब बात असली परिभाषा की होती है तो आर्किटेक्चर बिल्डिंग बनाने से ज्यादा कलात्मकता की मांग करता है। यह एक सृजनात्मक क्षेत्र हैं और यह किसी बिल्डिंग को बनाने की कला और विज्ञान दोनों से संबंद्ध होता है।

सिविल इंजीनियरिंग: सिविल इंजीनियरिंग एक बहुत वृहद् शब्द है। इसमें भवन के डिजाइन, कंस्ट्रक्शन और उसके प्राकृतिक और भौतिक पर्यावरण के रखरखाव का काम शामिल है। इसमें सड़कें, पुल, नहरें, बाँध और भवन हर चीज शामिल हैं। दूसरे शब्दों में सिविल इंजीनियरिंग भवन निर्माण के दूसरे संरचनात्मक तत्वों पर फोकस करता है। तय करता है कि कौन-सा मटेरियल का इस्तेमाल किया जाना है, संरचना लंबे समय तक कैसे टिकी रह सकती है और उसके लिए क्या-क्या प्रयास करने होंगे?

बहुत साधारण शब्दों में आर्किटेक्ट्स दी हुई जगह का सबसे अच्छा इस्तेमाल करते हुए अपनी कल्पनाशीलता और गणितीय कौशल से ज्यादा सुविधाजनक बनाता है। इसके उलट एक सिविल इंजीनियर असल में आर्किटेक्ट द्वारा दी गई डिजाइन को असेस करता है कि वह समय पर और उस जगह में उसी तरह का निर्माण करते हुए उतना मजबूत हो पाएगा? इस दृष्टि से एक पक्ष कलात्मक है और दूसरा व्यवहारिक।

क्या है दोनों विषयों के क्षेत्र का विस्तार?

विषय का क्षेत्र संभवत: सबसे बड़ा और महत्वपूर्ण अंतर है आर्किटेक्चर और सिविल इंजीनियरिंग के बीच का।

आर्किटेक्चर बिल्डिंग की डिजाइन और संरचना में उसकी व्यवहारिकता और सौंदर्य से संबंध रखता है। आर्किटेक्चर मूलभूत संरचना के तत्वों के साथ बिल्डिंग के सुंदर और व्यावहारिक होने पर जोर देता है।

दूसरी तरफ सिविल इंजीनियर्स उसकी आर्किटेक्चरल डिजाइन के प्लान को लागू करता है और देखता है कि उन्हें किस तरह से एक्जिक्यूट किया जा सकता है। सिविल इंजीनियर उसके संरचनात्मक ढांचे की डिजाइन पर फोकस करता है और एक्स्ट्रीम कंडीशन्स में उसके रखरखाव और उसकी मजबूती को निश्चित करता है।

फील्ड ऑफ ऑपरेशन

आर्किटेक्ट्स और सिविल इंजीनियर्स लगभग साथ-साथ हीकाम करते हैं, फिर भी दोनों का काम एक-दूसरे के काम ओवरलेप करता है। हालांकि जब बात काम करने के क्षेत्र की हो तो सिविल इंजीनियर्स के पास बड़ा क्षेत्र होता है। आर्किटेक्ट्स के पास उतना नहीं होता है। साधारण शब्दों में कहें तो आर्किटेक्ट्स किसी भी निर्माण योजना के विकास से जुड़ा होता है, जिसमें क्रिएटिव प्रेजेंटेशन जैसे कॉलोनी, व्यावसायिक कॉम्प्लेक्स, सार्वजनिक निर्माण आदि शामिल होता है। दूसरी और किसी भी तरह का निर्माण कार्य स्ट्रक्चरल इंजीनियरिंग काम सिविल इंजीनियर्स द्वारा किया जाता है जैसे पुल, रेलवे ट्रेक और हार्बर्स। आमतौर पर इस तरह के प्रोजेक्ट्स में किसी भी तरह से एस्थेटिक्स की जरूरत नहीं होती है। ये विशुद्ध रूप से व्यावहारिक दृष्टिकोण पर आधारित रहते हैं।

अब हम इस बात पर स्पष्ट है कि दोनों क्षेत्रों में क्या व्यावहारिक अंतर है, अब बात है अकादमिक अंतर की। अकादमिक तौर पर आर्किटेक्चर और सिविल इंजीनियरिंग का कोर्स एक-दूसरे से बहुत मिलता-जुलता है। फिर भी जैसा कि पहले ही बताया जा चुका है कि दोनों कार्यक्रम का शैक्षिक पक्ष एक-दूसरे से बहुत अलग है। जहां आर्किटेक्ट्स अपने कोर्स में ज्यादा समय सौंदर्य पक्ष पर खर्च करता है, वहीं सिविल इंजीनियर पढ़ने वालों का ज्यादातर वक्त निर्माण के तकनीकी पक्ष पर खर्च होता है।

कोर्स और एलिजिबिलिटी

आमतौर पर बी. आर्क का पांच साल का स्नातक कोर्स पूरे देश के आर्किटेक्चर स्कूल में करवाया जाता है। काउंसिल ऑफ आर्किक्टेक्चर द्वारा आयोजित कॉमन इंट्रेंस टेस्ट के माध्यम से एडमिशन होता है। कंपलसरी सब्जेक्ट की जहां तक बात है, वे सब बिल्कुल इंजीनियरिंग की तरह ही होते हैं। बी. आर्क के स्टूडेंट को फिजिक्स, केमिस्ट्री और मैथ्य जैसे विषयों के साथ 12 वीं बोर्ड की परीक्षा पास करनी होती है।

स्नातक कोर्स को पूरा करने के बाद बी. आर्क. के स्टूडेंट्स आर्किटेक्चर में दो साल का स्नातकोत्तर का कोर्स भी कर सकते हैं। सिविल इंजीनियरिंग करने वालों के लिए आमतौर पर दो रास्ते हैं। पहला डिग्री कोर्स कर लें, या फिर कम अवधि का डिप्लोमा कोर्स कर लें। सिविल इंजीनियर बनना चाहने वालों के बीच सिविल इंजीनियरिंग ब्रांच से बी. टेक. करना बहुत लोकप्रिय है। यह कोर्स पूरे देश के इंजीनियरिंग कॉलेजों में उपलब्ध होता है। इन कॉलेजों में एडमिशन जीईई मेन्स, एनआईटी, आईआईआईटी और जीएफटीआई या फिर आईआईटी और आईएसएम-धनबाद में एडमिशन जेईई एडवांस के परीक्षा में मेरिट के आधार पर होता है। जो सिविल इंजीनियरिंग करना चाहते हैं उनका 12 वीं बोर्ड में फिजिक्स, केमिस्ट्री और मैथ्य लेकर पास होना आवश्यक है।

रोजगार के अवसर व पैकेज

सिविल इंजीनियरिंग और आर्किटेक्चर जैसे विषय को चुनने की एक सबसे बड़ी वजह ही यह है कि इसमें रोजगार के अवसर भी ज्यादा है और पैकेज भी अच्छा मिलता है। फिर भी दोनों कोर्स के बीच कौन-सा कोर्स चुना जाए इसे लेकर कंफ्यूजन भी कम नहीं है।

आर्किटेक्चर: आर्किटेक्ट अलग-अलग कंस्ट्रक्शन कंपनियों में डिजाइनर के तौर पर काम करता है। उसकी पहली जिम्मेदारी अपने क्लाइंट की जरूरत को समझना और उस हिसाब से व्यावहारिक, सुविधाजनक और सुंदर डिजाइन तैयार करना है। प्राइवेट बिल्डर्स के साथ-साथ सरकारी एजेंसी भी पब्लिक वर्क्स डिपार्टमेंट्स, नेशनल बिल्डिंग ऑर्गेनाइजेशन, टाउन एंड कंट्री प्लानिंग ऑर्गेनाइजेशन, नेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ अर्बन अफेयर्स और अन्य में भी आर्किटेक्ट्स की जरूरत हुआ करती है। जहां तक वेतन की बात है तो यह 25 से 30 हजार महीने से शुरू होता है और यह आपके कौशल और अनुभव के आधार पर एक आर्किटेक्ट 1 लाख रुपए महीना तक अर्न कर सकता है।

सिविल इंजीनियरिंग: सिविल इंजीनियरिंग में आर्किटेक्ट्स से ज्यादा स्कोप है। सिविल इंजीनियर्स के पास सरकारी के साथ-साथ प्राइवेट संस्था के लिए भी बेहतरीन काम करने के अवसर होते हैं।

रोजगार के अवसरों की जहां तक बात है, प्राइवेट संस्था में तो अवसर हैं ही, सरकारी संस्थाओं में भी जरूरत होती है। सरकारी संस्थाओं के साथ-साथ सिविल इंजीनियर्स की जरूरत तो इंडियन आर्मी में भी होती है। इसके अलावा वे अपनी खुद की इंजीनियरिंग कंसल्टेंसी फर्म भी स्थापित कर सकते हैं। इसके साथ ही टीचिंग में भी बहुत मांग है। जिनके पास स्वयं लिखने का कौशल है वे अपने ही क्षेत्र में तकनीकी लेखन कर सकते हैं। आपका कौशल और आपकी योग्यता के आधार पर एक सिविल इंजीनियर की अर्निंग 4 से 8 लाख रुपए तक हो सकती है। आर्किटेक्ट्स की तरह की सिविल इंजीनियर्स को भी अनुभव और कौशल के आधार पर बेहतर अर्निंग हो सकती है।

निष्कर्ष सिविल इंजीनियरिंग और आर्किटेक्चर दोनों ही बहुत उपयोगी एकेडमिक प्रोग्राम्स है, दोनों के अपने-अपने लाभ और हानि है। अपनी सुविधा और रुचि के हिसाब से आप दोनों में कोई भी कोर्स चुन सकते हैं। तरक्की का संबंध तो आपके बेहतर परफॉर्मेंस से है जो आपकी योग्यता और कौशल पर निर्भर करता है।

डिस्टेंस एजुकेशन

कमाएं भी पढ़ें भी

डिस्टेंस एजुकेशन प्रोग्राम स्टूडेंट्स को ऑनलाइन पढ़ने की सुविधा तो देते हैं, लेकिन इसकी क्रेडिबिलिटी को लेकर कंफ्यूज रहने के कारण स्टूडेंट्स इसे चुनने का निर्णय नहीं ले पाते। स्टूडेंट्स की इसी समस्या को दूर करने के लिए हम कर रहे हैं इसके हर पहलू का विश्लेषण...।

डिस्टेंस एजुकेशन प्रोग्राम स्टूडेंट्स को जॉब के साथ-साथ पढ़ाई करने की सहूलियत देता है। लेकिन बावजूद इसके कई स्टूडेंट्स इसकी वैल्यू को लेकर कन्फ्यूज्ड रहते हैं। यह मोड ऑफएजुकेशन स्टूडेंट्स के लिए कितना बेनिफीशियल हो सकता है, यह पूरी तरह से स्टूडेंट पर ही निर्भर करता है। अगर आप भी डिस्टेंस मोड से हायर एजुकेशन पाने को लेकर कन्फ्यूज्ड हैं तो जानें डिस्टेंस लर्निंग प्रोग्राम की पूरी अनालिसिस ताकि आपके लिए डिसीजन लेना आसान हो जाए...

डिस्टेंस एजुकेशन के लाभ

1. लचीलापन

फ्लेक्सिबल होने से वर्किंग प्रोफेशनल्स के लिए यह फायदेमंद है। ऐसे स्टूडेंट्स जिन्हें काम के कारण अपनी पढ़ाई छोड़नी पड़ी या जो दूसरे शहर जाकर नहीं पढ़ सकते हैं, वो इसका फायदा उठा सकते हैं।

2. समय व ऊर्जा की बचत

अगर आप गांव या कस्बे में रहते हैं, जहां हायर एजुकेशन के लिए अच्छे कॉलेज नहीं हैं, तो डिस्टेंस मोड अच्छा ऑप्शन है।

3. कोई दबाव नहीं

कॉन्सेप्ट समझने और याद करने की हर स्टूडेंट की अपनी एबिलिटी होती है। इसमें आप को प्रेशर या कांपीटिशन का दबाव महसूस नहीं होता है।

4. आर्थिक रूप से किफायती

रेग्युलर कोर्सेस की अपेक्षा इसके कोर्सेस सस्ते होते हैं साथ ही कॉलेज जाने या दूसरे शहर में रहकर पढ़ने का खर्चा भी बचता है।

5. सुविधाजनक

आप घर या ऑफिस कहीं से भी ऑनलाइन अपना असायनमेंट सब्मिट कर सकते हैं।

6. समय की सुविधा

आपको जब समय मिले, तब आप ऑनलाइन लेक्चर्स अटैंड कर सकते हैं। वर्चुअल क्लासमेट्स से डिस्कस कर डाउट्स क्लियर कर सकते हैं।

7. कहीं से भी शुरू करें

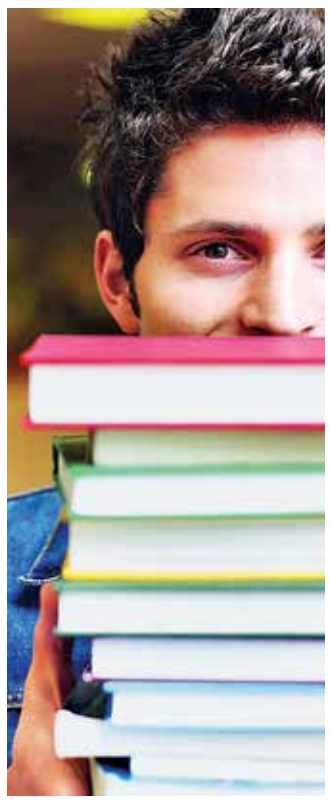

आपको स्टडी मटैरियल प्रोवाइड किया जाता है। आप चाहे जिस टॉपिक से अपनी स्टडी शुरू कर सकते हैं।

डिस्टेंस एजुकेशन की खामियां

1. सीधे संपर्क का अभाव

इस मोड का एक बड़ा नुकसान ही यह है कि टीचर्स के साथ आपका डायरेक्ट कॉन्टेक्ट नहीं रहता है। हालांकि ऑनलाइन लेक्चर्स में टीचर्स से अपनी क्वैरीज सॉल्व कर सकते हैं, लेकिन कोर्स बुक को बिना मेंटर की हेल्प के पढ़ना मुश्किल होता है।

2. तकनीक पर अति निर्भरता

इस मोड में तकनीक पर स्टूडेंट की डिपेंडेंसी हद से ज्यादा बढ़ जाती है। ऐसे में आपका टेकसेवी होना बहुत जरूरी है।

3. अनुशासन का अभाव

इस मोड में कोई टीचर ऑपको गाइड करने के लिए नहीं रहता है। आप कितनी देर पढ़ रहे हैं, कितना पढ़ रहे हैं और सही डायरेक्शन में आगे बढ़ रहे हैं या नहीं, इसका आकलन आपको स्वयं ही करना होगा। यहां पढ़ाई का कोई अनुशासन नहीं होगा।

4. साथ पढ़ाई की सुविधा नहीं

भले ही आप वर्चुअल क्लासमेट्स के साथ पढ़े, लेकिन रेग्युलर क्लासेस में पढ़ने से पर्सनल इंटरएक्शन बढ़ता है, जो डिस्टेंस एजुकेशन में नहीं हो पाता है।

5. कुछ कोर्स नहीं होते

कुछ कोर्सेस इस मोड में कवर नहीं किए जा सकते हैं। जैसे मेडिकल या फिर इंजीनियरिंग।

6. कभी-कभी वेटेज भी कम

कई इंप्लॉयर्स डिस्टेंस एजुकेशन की तुलना में रेग्युलर कोर्सेस के कैंडीडेट्स को ज्यादा प्रिफरेंस देते हैं। हालांकि अब सिनेरियों तेजी से बदल रहा है। आप डिस्टेंस एजुकेशन को चुनें या फिर रेग्युलर को, यह आपकी सुविधा, जरूरत और कोर्स की प्रकृति पर निर्भर करता है।

टॉपर टिप्स

सफलता के लिए टेंशन फ्री होकर करें तैयारी

क्लैट में 62 वीं रैंक लाने वाली अनुभूति गर्ग बता रही हैं अपनी सफलता के नुस्खे...।

अगर आप प्रतियोगी परीक्षा में सफलता हासिल करना चाहते हैं तो बिल्कुल टेंशन फ्री होकर तैयारी करें। परीक्षा कक्ष में अगर आप कठिन पेपर देखकर घबरा गए तो जो कुछ आता है वो भी ढंग से हल नहीं कर पाएंगे। ऐसे में हमेशा शांत दिमाग से प्रश्नपत्र को हल करें। वहीं देश भर में लॉ यूनिवर्सिटीज में दाखिल के लिए आयोजित होने वाले कॉमन लॉ एडमिशन टेस्ट (क्लैट) में सफलता पाने के लिए आपकी इंग्लिश अच्छी होनी चाहिए और मैथ्स भी अच्छे ढंग से आनी चाहिए। क्योंकि मैथ्स मेरिट बनाने में मददगार होती है। देश भर में क्लैट में 62 वीं रैंक लाने वाली अनुभूति गर्ग ने परीक्षा में इन्हीं बातों पर विशेष फोकस किया और अच्छी रैंक हासिल की।

कैलकुलेशन आपके फिंगर टिप्स पर हों

अनुभूति कहती हैं कि इंग्लिश में आपके पास अच्छा शब्दकोश हो और आप नॉवेल, इंग्लिश की किताबें और मैग्जीन पढ़कर इसे और बेहतर बनाने पर जोर देते रहें। मैथ्स में जो 20 सवाल पूछे जाते हैं, वही आपकी मेरिट बनाने में अच्छा रोल अदा करते हैं। ऐसे में मैथ्स को अच्छे से तैयार करें और कैलकुलेशन आपके फिंगर टिप्स पर हो जाए, ऐसी तैयारी रखें। लीगल एप्टीट्यूट की भी अच्छे ढंग से तैयारी करें। परीक्षा कक्ष में आप कभी भी प्रश्नपत्र कठिन आने पर घबराएं नहीं। अगर आप घबरा गए तो फिर जो सवाल आते होंगे उन्हें भी ढंग से हल नहीं कर पाएंगे। यही ख्याल आपको तब भी रखना है, जब पेपर आपको सरल लगे। क्योंकि अधिक उत्साह में भी कई बार गलतियां हो जाती है। ऐसे में कूल होकर आप परीक्षा कक्ष में प्रश्नों को हल करें।

अनुभूति कहती हैं कि हमेशा आप वही करियर चुनें जो आपको पसंद हो। वे कहती है कि मेरी मां डॉ. दीपाली गर्ग और पिता डॉ. अरुण गर्ग दोनों ही पेशे से डॉक्टर हैं। मगर मैंने लॉ फील्ड में जाने का निर्णय लिया। और परिवार ने पूरा सपोर्ट किया। इंटरमीडिएट की पढ़ाई गोरखपुर में मेट्रोपोलिटन स्कूल से की और लखनऊ के गोमतीनगर में नाना के घर पर रहकर क्लैट की तैयारी की।

टाइम मैनेजमेंट जितना बेहतर, सफलता के उतने अवसर

टाइम मैनेजमेंट आपका जितना बेहतर होगा आपको उतनी अच्छी सफलता मिलेगी। दिनचर्या का पालन करने से लेकर परीक्षा कक्ष में परीक्षा देने तक इसका महत्व होता है। ऐसे में आप टाइम मैनेजमेंट के महत्व को अच्छे से समझ लें तो बेहतर होगा। इसके लिए टाइम मैनेजमेंट का शुरू से ही अभ्यास करना चाहिए। हर छोटी-बड़ी बात को समय के आधार पर विभाजितक कर देखना चाहिए।

एडमिशन अलर्ट

इंजीनियरिंग व मैनेजमेंट में मौके

बीटेक (राजीव गांधी इंस्टीट्यूट ऑफ पेट्रोलियम टेक्नोलॉजी)

राजीव गांधी इंस्टीट्यूट ऑफ पेट्रोलियम टेक्नोलॉजी, राय बरेली ने अपने यहां पेट्रोलियम इंजीनियरिंग व केमिकल इंजीनियरिंग में 4 वर्षीय बीटेक कोर्स में प्रवेश के लिए आवेदन आमंत्रित किए हैं। इसमें प्रवेश जेईई (एडवांस्ड) 2016 की रैंक लिस्ट के आधार पर दिए जाएंगे। उम्मीदवार ने 12वीं या समकक्ष परीक्षा में कम से कम 60 प्रतिशत (एससी/ एसटी/ दिव्यांग हेतु 55 प्रतिशत) अंक प्राप्त किए हों।

- **ऑनलाइन आवेदन की अंतिम तिथि:** 17 जुलाई 2016
- **अधिक जानकारी:** www.rgipt.ac.in

पीडीसी (थर्मल) (नेशनल पावर ट्रेनिंग इंस्टीट्यूट)

नेशनल पावर ट्रेनिंग इंस्टीट्यूट, दिल्ली ने अपने पोस्ट डिप्लोमा कोर्स इन थर्मल पावर प्लांट इंजीनियरिंग (2016-17) में प्रवेश के लिए आवेदन आमंत्रित किए हैं। यह 52 सप्ताह का मॉड्यूलर कोर्स है। इसके लिए ऐसे उम्मीदवार आवेदन कर सकते हैं, जिन्होंने मैकेनिकल/ इलेक्ट्रिकल इंजीनियरिंग में नियमित डिप्लोमा किया हो। ग्रेजुएट इंजीनियर इसके लिए पात्र नहीं हैं।

- **आवेदन की अंतिम तिथि:** 31 जुलाई 2016
- **अधिक जानकारी:** www.nptidelhi.net

पीजीडीएम बैंकिंग एंड फाइनेंशियल सर्विसेज (एनआईबीएम)

नेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ बैंक मैनेजमेंट, पुणे ने अपने पोस्ट ग्रेजुएट डिप्लोमा इन मैनेजमेंट कोर्स में प्रवेश के लिए आवेदन बुलवाए हैं। इसके लिए ऐसे उम्मीदवार आवेदन कर सकते हैं, जिन्होंने कम से कम 50 प्रतिशत अंकों सहित बैचलर्स डिग्री प्राप्त की हो। कैट 2015/ एटीएमए 2016/ सीमैट 2016 के स्कोर के आधार पर उम्मीदवारों को राइटिंग एबिलिटी टेस्ट व पर्सनल इंटरव्यू के लिए शॉर्ट-लिस्ट किया जाएगा।

- **आवेदन की अंतिम तिथि:** 29 अगस्त 2016
- **अधिक जानकारी:** http://pgdm.nibmindia.org

स्कॉलरशिप कॉर्नर

5वीं से डिग्री स्तर तक पाएं स्कॉलरशिप

नेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ करियर एज्युकेशन ने नेशनल स्कॉलरशिप एग्जाम्स की घोषणा की है। पांचवी से लेकर डिप्लोमा और डिग्री स्तर के स्टूडेंट्स के लिए आयोजित यह एग्जाम अलग-अलग स्तर पर होगी। इसके तहत 5 वीं से लेकर 12 वीं तक के एसएससी/ आईसीएससी/ सीबीएसई इंग्लिश और दूसरी क्षेत्रीय भाषाओं के विद्यार्थी हिस्सा ले सकते हैं। साथ ही डिप्लोमा और डिग्री स्तर के विद्यार्थी भी इसका हिस्सा हो सकते हैं। इस परीक्षा में किसी भी विषय और किसी भी साल के स्टूडेंट भाग ले सकते हैं। क्षेत्रीय भाषा में भी परीक्षा का प्रावधान है। इसमें अलग-अलग स्तर पर स्कॉलरशिप की अलग-अलग राशि का प्रावधान है।

- **आवेदन की अंतिम तिथि:** 30 सितंबर 2016
- **अधिक जानकारी:** http://www.niceedu.org